ISSN : 2583-2948

कैसा समय है यह

सुशांत सुप्रिय
गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड
इंदिरापुरम, ग़ाज़ियाबाद - 201014
मो: 8512070086
ई-मेल : sushant1968@gmail.com

कैसा समय है यह
जब हल कोई चला रहा है
अन्न और खेत किसी का है
ईंट-गारा कोई ढो रहा है
इमारत किसी की है
काम कोई कर रहा है
नाम किसी का है

कैसा समय है यह
जब भेड़ियों ने हथिया ली हैं
सारी मशालें
और हम
निहत्थे खड़े हैं

कैसा समय है यह
जब भरी दुपहरी में अँधेरा है
जब भीतर भरा है
एक अकुलाया शोर
जब अयोध्या से बामियान तक
ईराक़ से अफ़ग़ानिस्तान तक
बौने लोग डाल रहे हैं

ISSN : 2583-2948

लम्बी परछाइयाँ

कामगार औरतें

कामगार औरतों के

स्तनों में

पर्याप्त दूध नहीं उतरता

मुरझाए फूल-से

मिट्टी में लोटते रहते हैं

उनके नंगे बच्चे

उनके पूनम का चाँद

झुलसी रोटी-सा होता है

उनकी दिशाओं में

भरा होता है

एक मूक हाहाकार

उनके सारे भगवान

पत्थर हो गए होते हैं

ख़ामोश दीये-सा जलता है

उनका प्रवासी तन-मन

फ़्लाइ-ओवरों से लेकर

गगनचुम्बी इमारतों तक के

बनने में लगा होता है

उनकी मेहनत का

हरा अंकुर

anukarsh@alliance.edu.in

ISSN : 2583-2948

उपले-सा दमकती हैं वे

स्वयं विस्थापित होकर

हालाँकि टी. वी. चैनलों पर

सीधा प्रसारण होता है

केवल विश्व-सुंदरियों की

कैट-वाक का

पर उस से भी

कहीं ज़्यादा सुंदर होती है

कामगार औरतों की

थकी चाल